डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेकसरिया

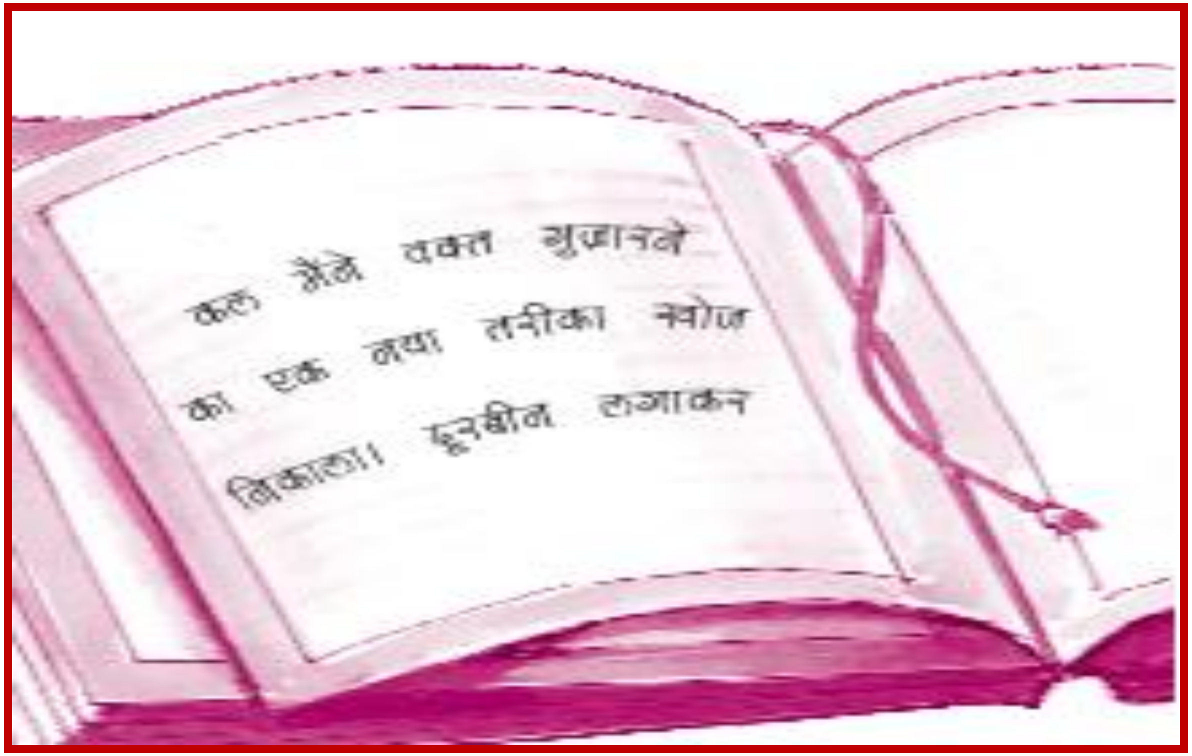

लेखक परिचय

- सीताराम सेकसरिया जी का जन्म राजस्थान के नवलगढ़ में 1892 में हुआ परंतु अधिकांश जीवन कलकत्ता में बीता।
- ये व्यापार से जुड़े होने के साथ-साथ अनेक साहित्यिक, साँस्कृतिक और नारी शिक्षण संस्थाओं के प्रेरक, संस्थापक और संचालक रहे।
- महात्मा गाँधी के आह्वाहन पर ये स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े। कुछ साल तक ये आज़ाद हिंद फ़ौज के मंत्री भी रहे।
- इन्होंने स्वाध्याय से पढ़ना लिखना-सीखा।
- **स्मृतिकण, मन की बात, बीता युग, नयी याद** और दो भागों में **एक कार्यकर्ता की डायरी** इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।
- 1962 में उन्हें भारत सरकार द्वारा **पद्मश्री** सम्मान से सम्मानित किया गया।

पाठ प्रवेश

अंग्रेज़ों से देश को मुक्ति दिलाने के लिए महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा था। इस आंदोलन ने जनता में आज़ादी की अलख जगाई। देश भर से ऐसे लाखों लोग सामने आए जो इस महासंग्राम में अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर थे। 26 जनवरी 1930 को गुलाम भारत में पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। यह सिलसिला आगे भी जारी रहा। आज़ादी के ढाई साल बाद, 1950 में यही दिन हमारे अपने गणतंत्र के लागू होने का दिन भी बना।

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की कामना करने वाले उन्हीं अनंत लोगों में से एक थे। वह दिन-प्रतिदिन जो भी देखते, सुनते और महसूस करते थे, उसे अपनी निजी डायरी में दर्ज कर लेते थे। यह क्रम कई वर्षों तक चला। इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और स्वयं लेखक सहित कलकत्ता (कोलकाता) के लोगों ने देश का दूसरा स्वतंत्रता दिवस किस जोश-खरोश से मनाया, अंग्रेज़ प्रशासकों ने इसे उनका अपराध मानते हुए उन पर और विशेषकर महिला कार्यकर्ताओं पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए, यही सब इस पाठ में वर्णित है। यह पाठ हमारे क्रांतिकारियों की कुर्बानियों की याद तो दिलाता ही है, साथ ही यह भी उजागर करता है कि एक संगठित समाज कृतसंकल्प हो तो ऐसा कुछ भी नहीं जो वह न कर सके।

Scanned with CamScanner

पाठ का सार

'डायरी का एक पन्ना' पाठ में 26 जनवरी 1931 की घटना का उल्लेख मिलता है। जब कलकत्तावासियों ने इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया था। कलकत्ता के संदर्भ में यह कहा जाता था कि वह स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रयास नहीं करता है। उसे स्वतंत्रता से कोई सरोकार नहीं है। परन्तु इस दिन स्वतंत्रता दिवस मनाकर उन्होंने इस बात को झूठला दिया। अपने माथे में लगा कंलक धो डाला। लेखक सीताराम सेकसरिया ने अपनी डायरी में इस महत्वपूर्ण दिन से जुड़े तथ्यों का समावेश किया है, जो इस पाठ के माध्यम से हमारे सामने रखा गया है। स्वतंत्रता यात्रा में कलकत्ता के हर नागिरक ने अपना भरपूर सहयोग दिया। इस अवसर पर पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी कंधे से कंधा मिलाकर अपनी भागीदारी दी। इस पाठ में इस दिन कलकत्तावासियों के जोश, उंमग, साहस और एकता का सुंदर चित्रण मिलता है।

CS Scanned with CamScanner

अंग्रेज़ों द्वारा किए गए अत्याचारों और उनकी बर्बरता का घृणित रूप भी हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है। अंग्रेज़ों ने इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाए जाने को अपराध घोषित कर दिया था और इसका समर्थन करने वाले लोगों में बहुत अत्याचार करे। उनकी लाठियों ने स्त्रियों को भी नहीं छोड़ा। परन्तु आज़ादी के दीवानें डरे नहीं और इस दिन को कामयाब बनाकर ही दम लिया। यह पाठ एक स्वर्णिम गाथा है, हमारे आज़ादी के दीवानों की कुर्बानियों की और स्त्रियों के सहयोग की।

CS Scanned with CamScanner

मन मानचित्रण

(पाठ के कुछ महत्वपूर्ण बिंदु)

डायरी का एक पन्ना

26 जनवरी 1931(कलकत्ता)

- बंगाल के नाम पर लगा कलंक साफ़
- कलकत्ता में दूसरा स्वतंत्रता दिवस
- अत्यंत खुशी एवं उल्लास का दिन,बड़े बाज़ार की सज़ावट
- चारों ओर पुलिस तथा लोगों के साथ उसका व्यवहार
- घायलों की फोटो उतरवाई गई
- पुलिस व कांग्रेस कौंसिल द्वारा निकाले गए नोटिस, खुला चैलेंज ओपन लड़ाई
- डॉ० दासगुप्ता द्वारा घायलों की देख-रेख
- पुलिस की मुठभेड़ में अनेक लोग घायल तथा स्त्रियों की गिरफ्तारी
- जुलुस में स्त्रियों का सहयोग, स्त्रियों के जुलूस का नेतृत्व विमल प्रतिभा द्वारा
- पुलिस द्वारा सुभाष बाबू व उनके साथियों कि गिरफ़्तारी

डायरी का एक पन्ना

26 जनवरी : आज का दिन तो अमर दिन है। आज के ही दिन सारे हिंदुस्तान में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया था। और इस वर्ष भी उसकी पुनरावृत्ति थी जिसके लिए काफी तैयारियाँ पहले से की गई थी। गत वर्ष अपना हिस्सा बहुत साधारण था। इस वर्ष जितना अपने दे सकते थे, दिया था। केवल प्रचार में दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था । सारे काम का भार अपने समझते थे, अपने ऊपर है, और इसी तरह जो कार्यकर्ता थे उनके घर जा-जाकर समझाया था।

बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतन्त्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में भी झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे, उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सार्जेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे।

कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रेफिक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

मोनुमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो भोर में छह बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में घेर लिया था पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झंडा फहराया गया।

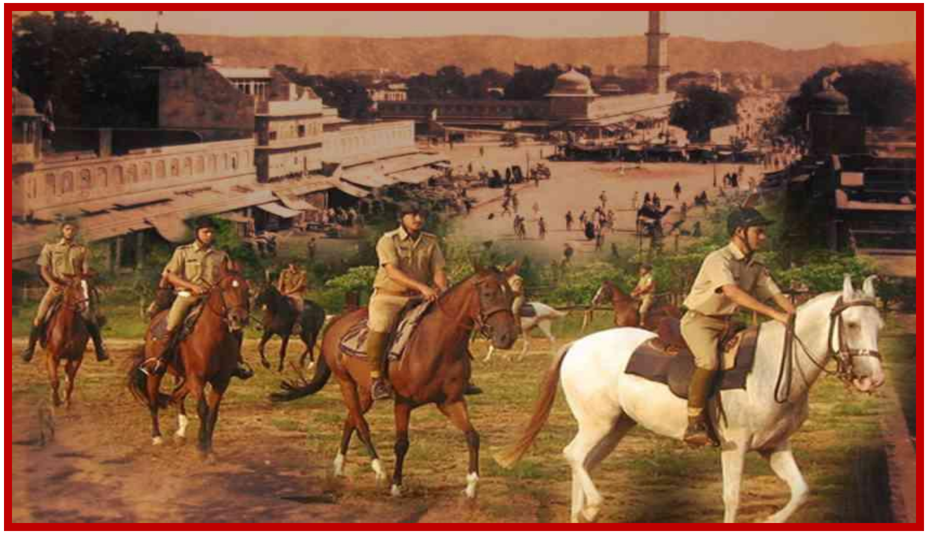

श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा-बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला जिसमें बहुत-सी लड़कियाँ थीं उनको गिरफ्तार कर लिया।

11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडोत्सव मनाया। जानकीदेवी, मदालसा (मदालसा बजाज-नारायण) आदि भी गई थीं। लड़कियों को, उत्सव का क्या मतलब है, समझाया गया। एक बार मोटर में बैठकर सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह- जगह फ़ोटो उतार रहे थे। अपने भी फ़ोटो का काफी प्रबंध किया था। दो-तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया। जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा था। जगह-जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी । मोनूमेंट के पास जैसा प्रबंध भोर में था वैसा करीब एक बजे नहीं रहा। इससे लोगों को आशा होने लगी कि शायद पुलिस अपना रंग न दिखलावे पर वह कब रुकने वाली थी । तीन बजे से ही मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना- बनाकर मैदान में घूमने लगे। आज जो बात थी वह निराली थी ।

जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इनस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल की तरफ से नोटिस निकाला गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए। उनको चौरंगी पर ही रोका गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं, बहुत आदमी घायल हुए, सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से वंदे मातरम बोल रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा, आप इधर आ जाइए। पर सुभाष बाबू ने कहा, आगे बढ़ना है।

यह सब तो अपनी सुनी हुई लिख रहे हैं पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े ज़ोर से वंदे मातरम बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर आँख मिंच जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनूमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झण्डा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं । प्रायः सबके पास झंडा था। जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे।

सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं। साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई । बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी, उसने फिर डंडे चलाने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज़्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और करीब 50-60 स्त्रियाँ वहाँ मोड़ पर बैठ गईं। पुलिस ने उनको पकड़कर लालबाज़ार भेज दिया।

स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा जिसका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थीं। उनको बहू बाज़ार के मोड़ पर रोका गया और वे वहीं मोड़ पर बैठ गईं । आस-पास बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, जिस पर पुलिस बीच-बीच में लाठी चलाती थी।

इस प्रकार करीब पौन घंटे के बाद पुलिस की लारी आई और उनको लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को पकड़ा गया । वृजलाल गोयनका जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था, पकड़ा गया।

पहले तो वह झंडा लेकर वंदे मातरम बोलता हुआ मोनूमेंट की ओर इतने ज़ोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा और उसे एक अंग्रेज़ी घुड़सवार ने लाठी मारी फिर पकड़कर कुछ दूर ले जाने के बाद छोड़ दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वहाँ पर भी उसको छोड़ दिया तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया । मदालसा भी पकड़ी गई थी । उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा था।

© BCCL 2020. ALL RIGHTS RESERVED.

alamy stock photo

सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ्तार नहीं की गई थीं। करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो कांग्रेस ऑफिस से फोन आया कि यहाँ बहुत आदमी चोट खाकर आए हैं और कई की हालत संगीन है उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकीदेवी के साथ वहाँ गए, बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देख-रेख तथा फ़ोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 आदमी वहाँ आ चुके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुँचे।

अस्पताल गए, लोगों को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुँचे और जो लोग घरों में चले गए, वे अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल ज़रूर हुए हैं। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चला, पर लालबाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया और लोग सोचने लग गए कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है।

अभ्यास प्रश्न

- पुलिस ने कैसा दमन चक्र चलाया और क्यों ?
- ‘डायरी का एक पन्ना’ आपको देश की आज़ादी का इतिहास पढ़ने को किस प्रकार प्रेरित करता है?
- स्वतंत्रता आंदोलन अब एक ओपन लड़ाई में तब्दील हो चुका था। यहाँ ओपन लड़ाई से क्या तात्पर्य है ?
- सुभाष बाबू के जुलुस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?
- ‘डायरी का एक पन्ना’ पाठ के माध्म से क्या संदेश दिया गया है ?

प्रस्तुतिः- डॉ॰ नवीता बुधवार